Sagar Rana & Shiv's Scan
Sagar Rana & Shiv's Scan

जरा सोचिये

• हरविन्द्र मांकड़ •

नीचे दिये दोनो चित्र देखने में तो एक जैसे लगते हैं मगर चित्रकार जी ने उनमें 12 अंतर कर दिये है। जरा उन अंतरो का पता तो लगाईये ")

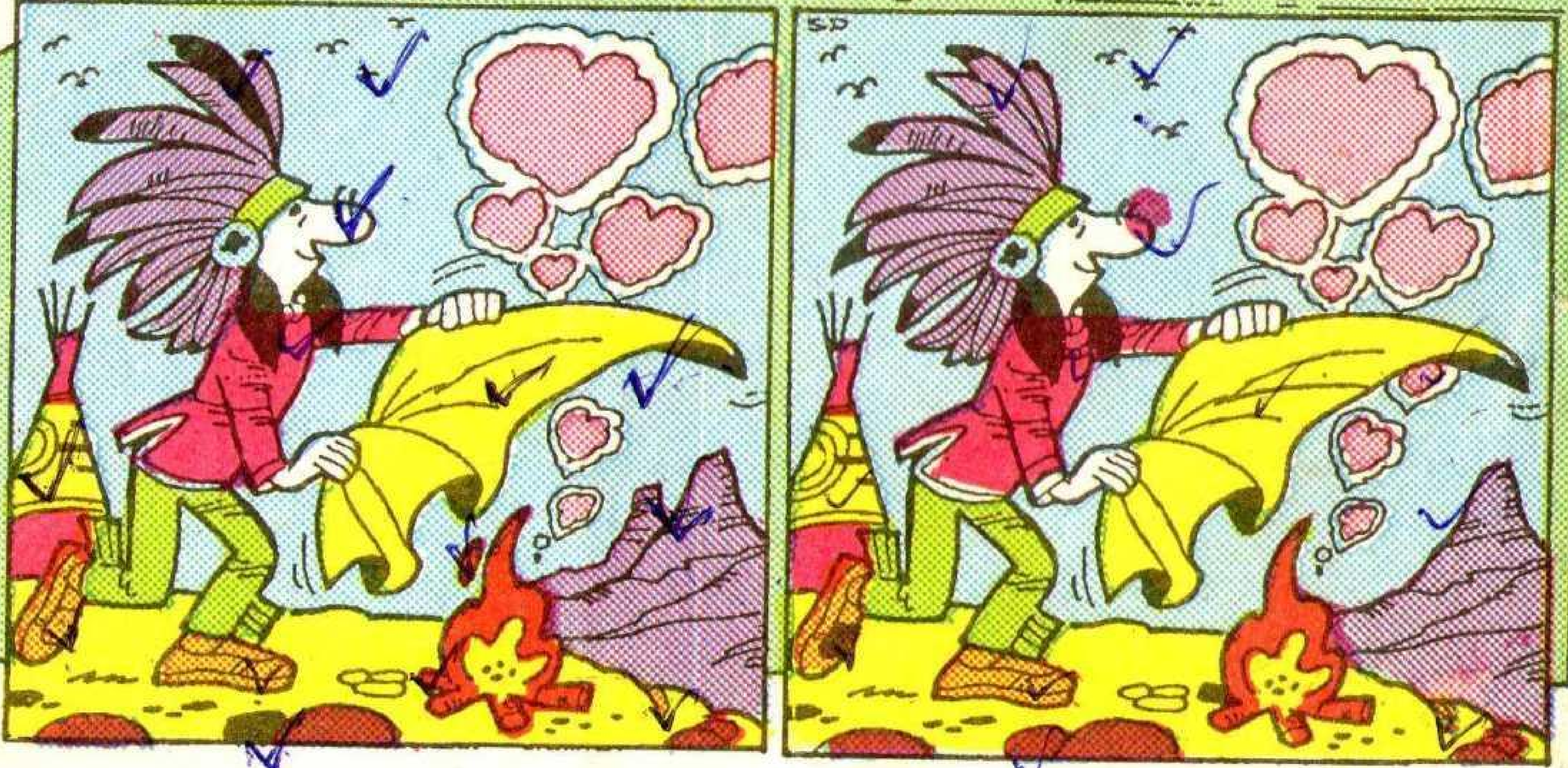

चित्रकार जब यह गुड़िया बना रहा था तो वह गलती से इसके कपड़े बनाना भूल गया। यहां गुड़िया के सभी कपड़े पड़े हैं। क्या आप उन्हे गुड़िया को पहना सकते हैं। तो बताइये कि कौन सा कपड़ा कहां आयेगा?

उतर :- (1) आग में अंतर है (2) जंगली का जूता (3) पीछे की एक पहाड़ी कम है (4) आग के नीचे जलती लकड़ी काली है (5) पास पड़ा पत्थर काला है (6) तम्बू का डिजाइन (7) जंगली की माला (8) उड़ते पक्षी कम हैं (9) जंगली की कमीज के अगले हिस्से का डिजाइन (10) जंगली के सिर पर लगा एक पंख काला है (11) धुआं गायब है (12) जंगली के हाथ में पकड़े कपड़े पर पड़ी लाईन गायब है।

Sagar Rana & Shiv's Scan

पिटारा कॉमिक्स, ए-5, मायापुरी, नई दिल्ली-110064

मोटू-पतलू और

चित्रांकन एंव कथानक
हरविन्द्र मांकड़

चारपाई का चक्कर

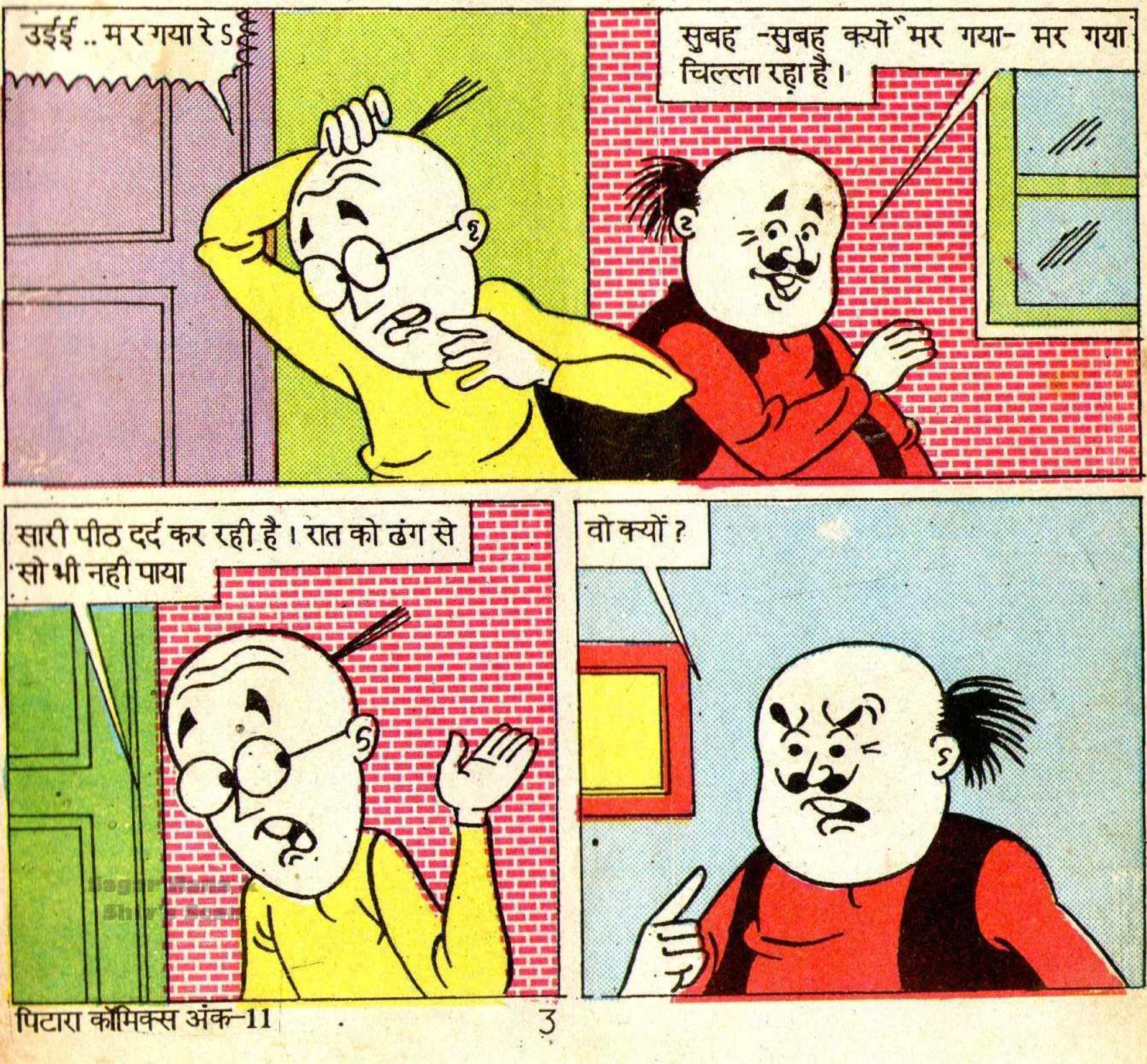

Sagar Rana & Shiv's Scan

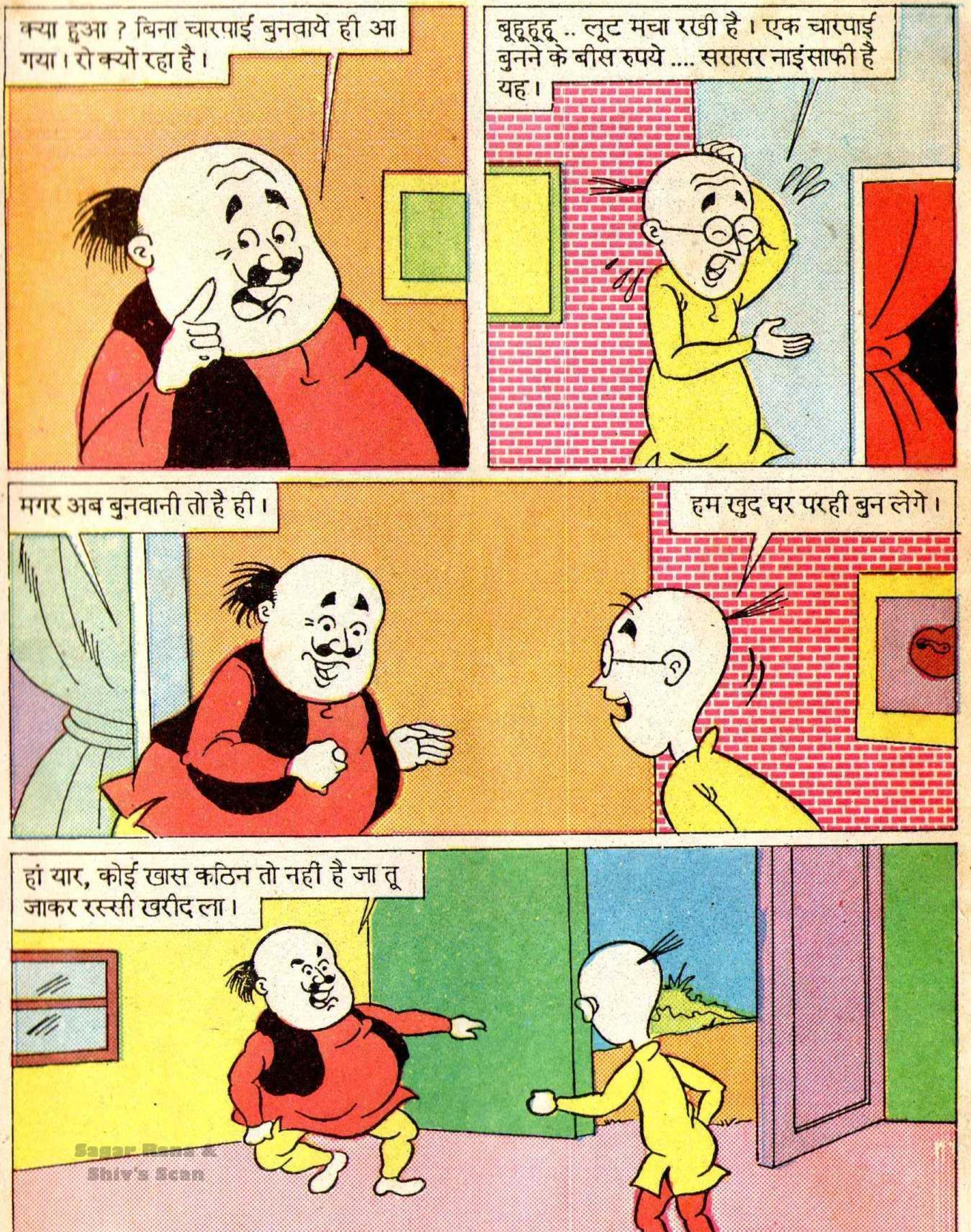

Sagar Rane & Shiv's Scan

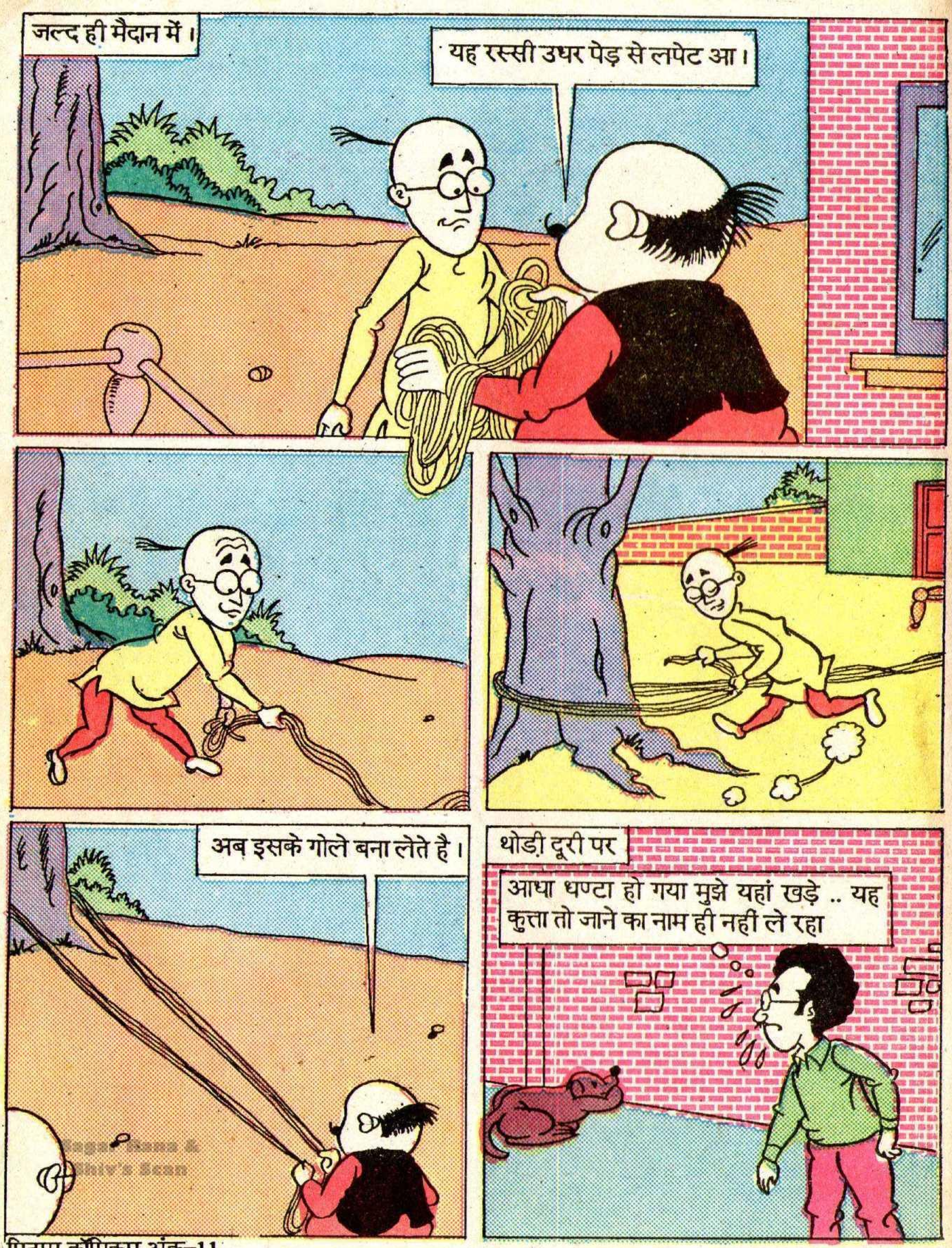
जल्द ही मैदान में।
यह रस्सी उधर पेड़ से लपेट आ।
अब इसके गोले बना लेते है।
थोड़ी दूरी पर
आधा घण्टा हो गया मुझे यहां खड़े .. यह कुत्ता तो जाने का नाम ही नहीं ले रहा

सोया ही तो पड़ा है, क्यों न तेजी से भाग कर गली पार कर जांऊ
एक..दो...
तीन..
मगर हाय री घसीटे की तकदीर

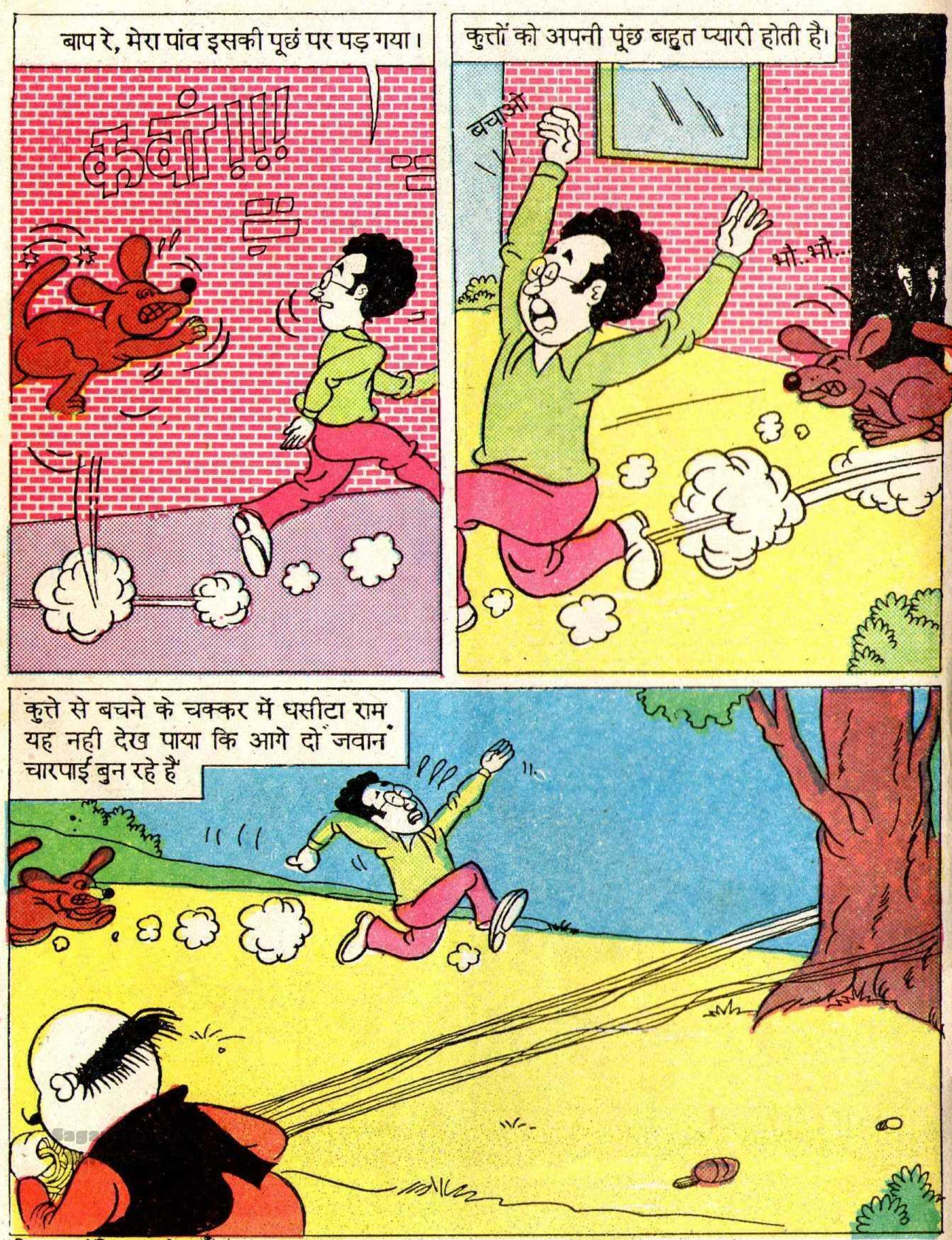

बाप रे, मेरा पांव इसकी पूछं पर पड़ गया।
कैं !!!
कुत्तों को अपनी पूंछ बहुत प्यारी होती है।
बचाओ
भौ..भौ..
कुत्ते से बचने के चक्कर में घसीटा राम यह नही देख पाया कि आगे दो जवान चारपाई बुन रहे हैं

Sagar Rana & Shiv's Scan

हम तो चारपाई बुन रहे थे।
?
आती भी है।
तुझे इससे मतलब ?
हेहेहे मुझे चारपाई बुनने का बीस साल का तजुर्बा है। बोलो, बुनवानी है ?
तो फिर हो जा फटाफट शुरु।

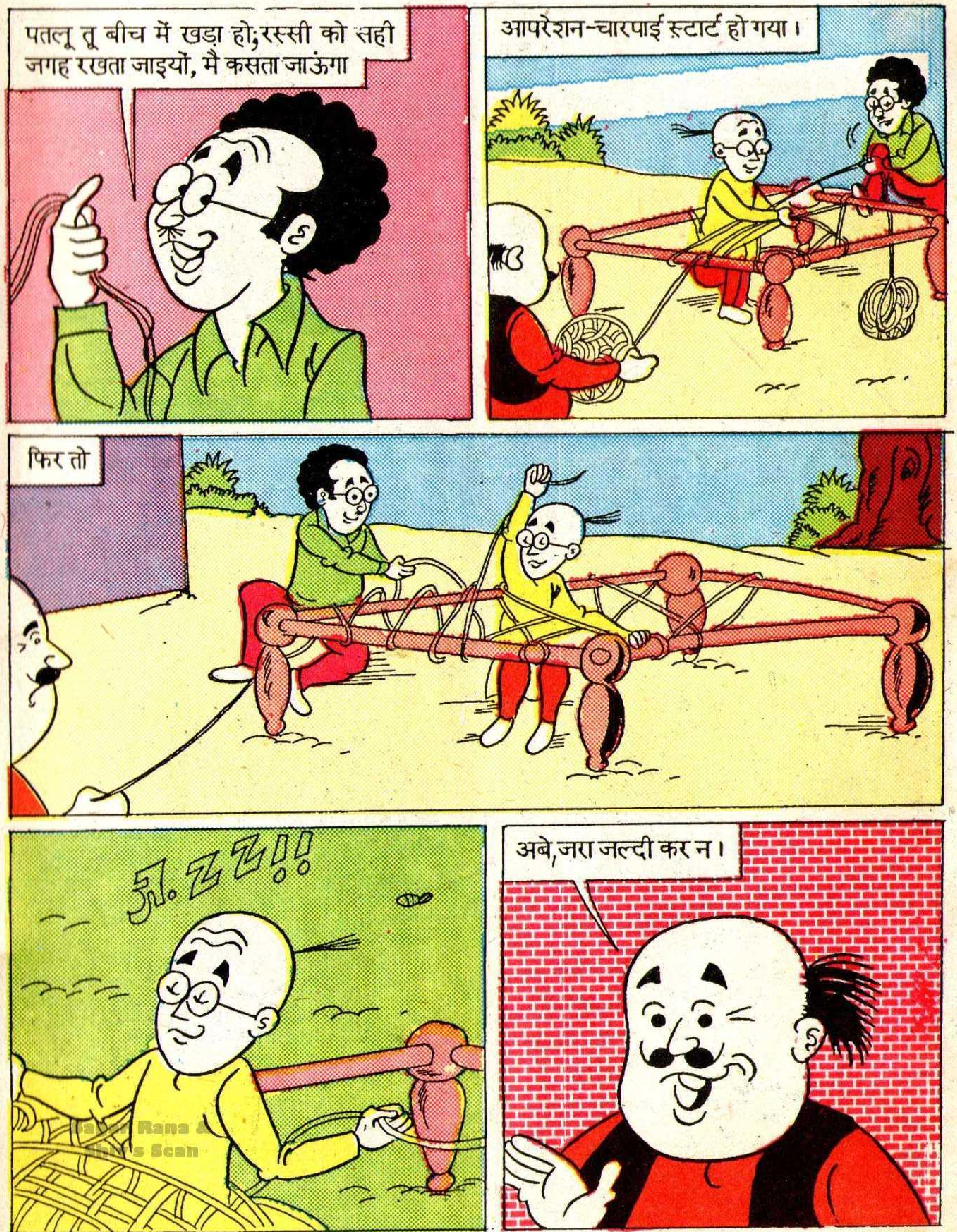
पतलू तू बीच में खड़ा हो;रस्सी को सही जगह रखता जाइयों, मै कसता जाऊंगा
आपरेशन-चारपाई स्टार्ट हो गया।
फिर तो
ज़.ZZ!!
अबे,जरा जल्दी कर न।

अब देखना मेरी सुपर रफ्तार .. चल तू भी बीच में खड़ा हो जा .. मैं अकेला ही लपेट लूंगा।
मोटू के बीच में खड़ा होते ही धसीटे ने अपनी रफ्तार दिखाई
पांच मिनट बाद ही
लो जी बुन गई चारपाई
अंय यह दोनो कहां गये ?

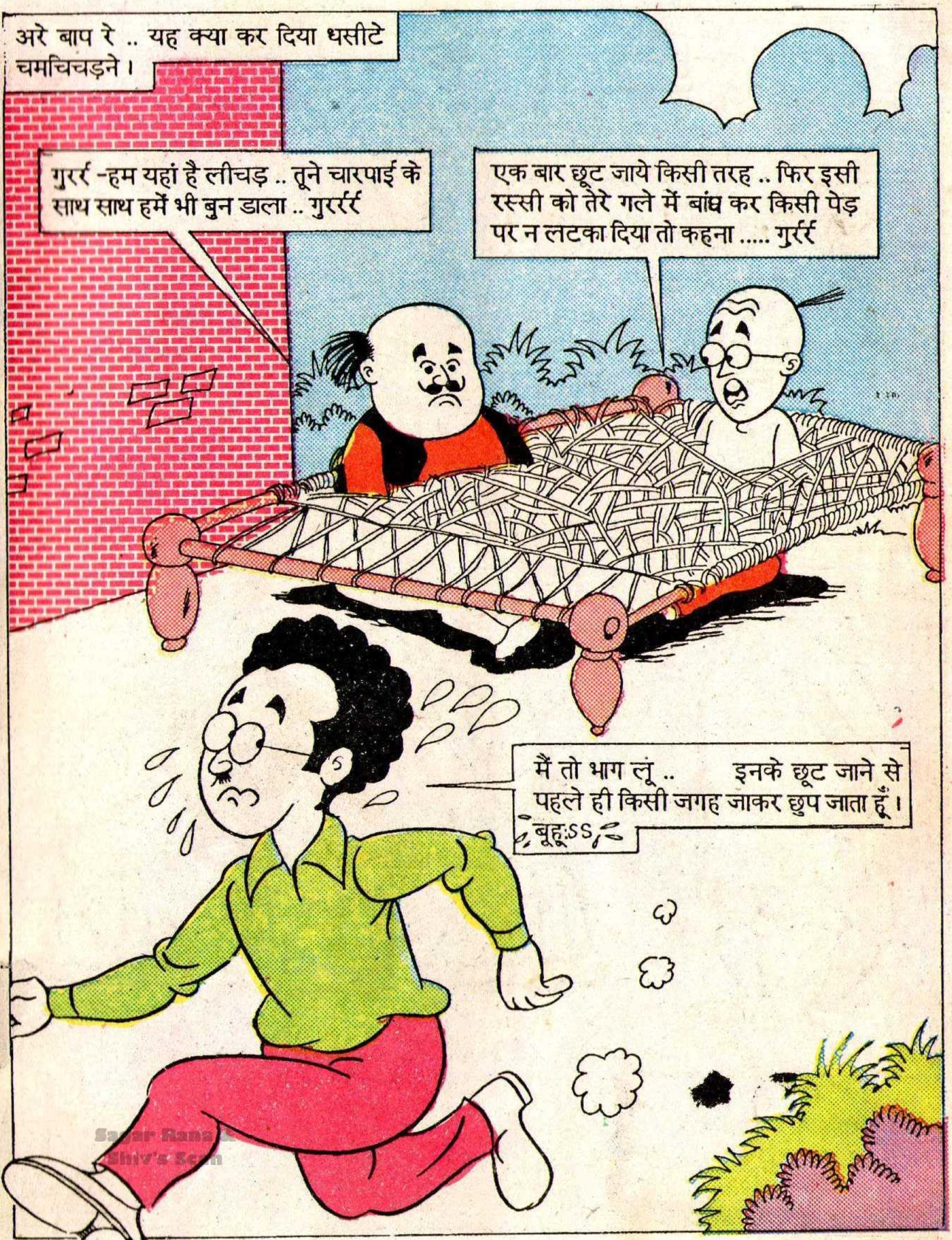

अरे बाप रे .. यह क्या कर दिया घसीटे चमचिचड़ने।
गुर्रर्र -हम यहां है लीचड़ .. तूने चारपाई के साथ साथ हमें भी बुन डाला .. गुर्रर्र
एक बार छूट जाये किसी तरह .. फिर इसी रस्सी को तेरे गले में बांध कर किसी पेड़ पर न लटका दिया तो कहना ..... गुर्रर्र
मैं तो भाग लूं .. इनके छूट जाने से पहले ही किसी जगह जाकर छुप जाता हूँ।
बूहूऽऽ

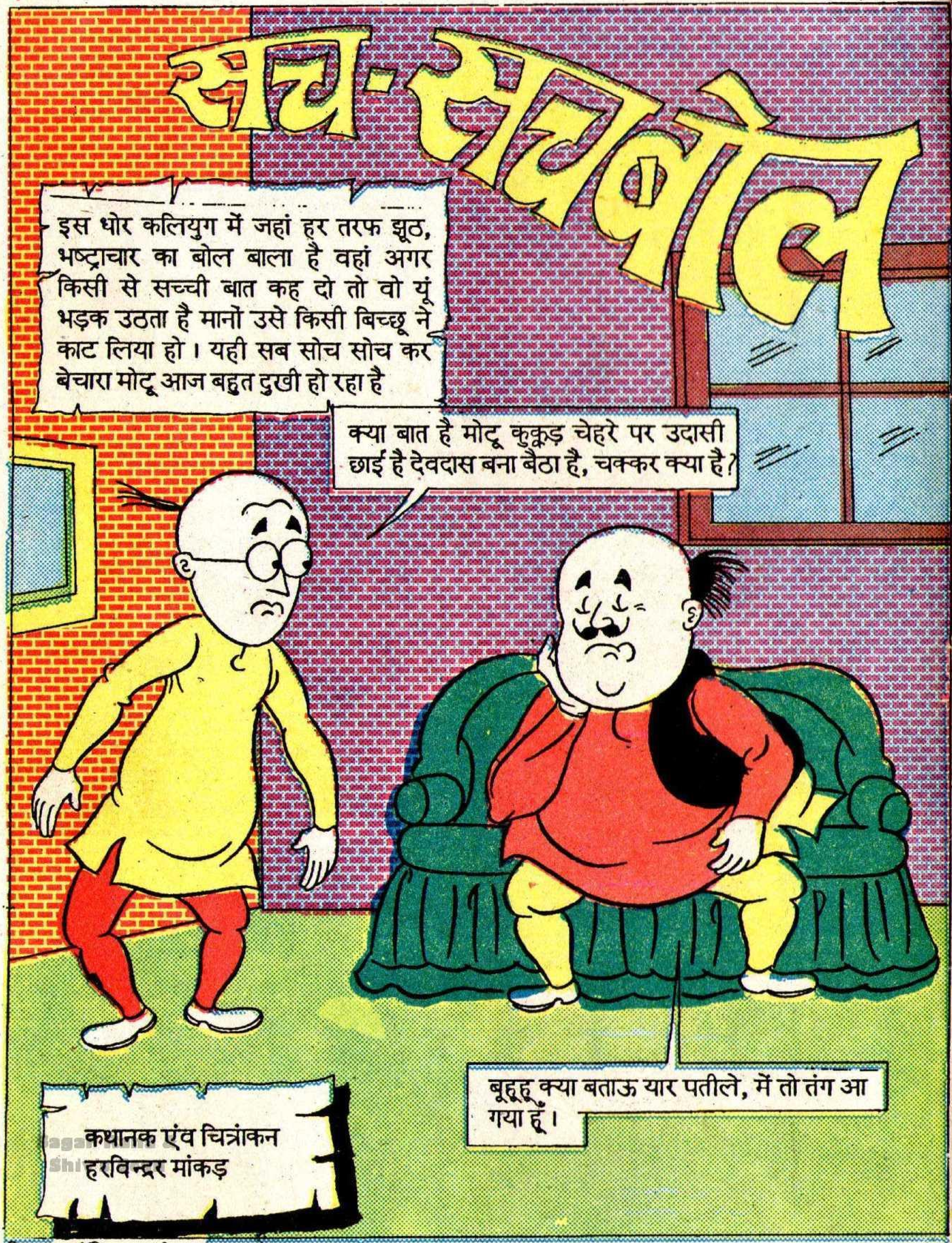
सच-सचबोल
इस घोर कलियुग में जहां हर तरफ झूठ, भष्ट्राचार का बोल बाला है वहां अगर किसी से सच्ची बात कह दो तो वो यूं भड़क उठता है मानों उसे किसी बिच्छू ने काट लिया हो। यही सब सोच सोच कर बेचारा मोटू आज बहुत दुखी हो रहा है
क्या बात है मोटू कुकूड़ चेहरे पर उदासी छाई है देवदास बना बैठा है, चक्कर क्या है?
बूहूहू क्या बताऊ यार पतीले, में तो तंग आ गया हूँ।
कथानक एंव चित्रांकन
हरविन्द्रर मांकड़

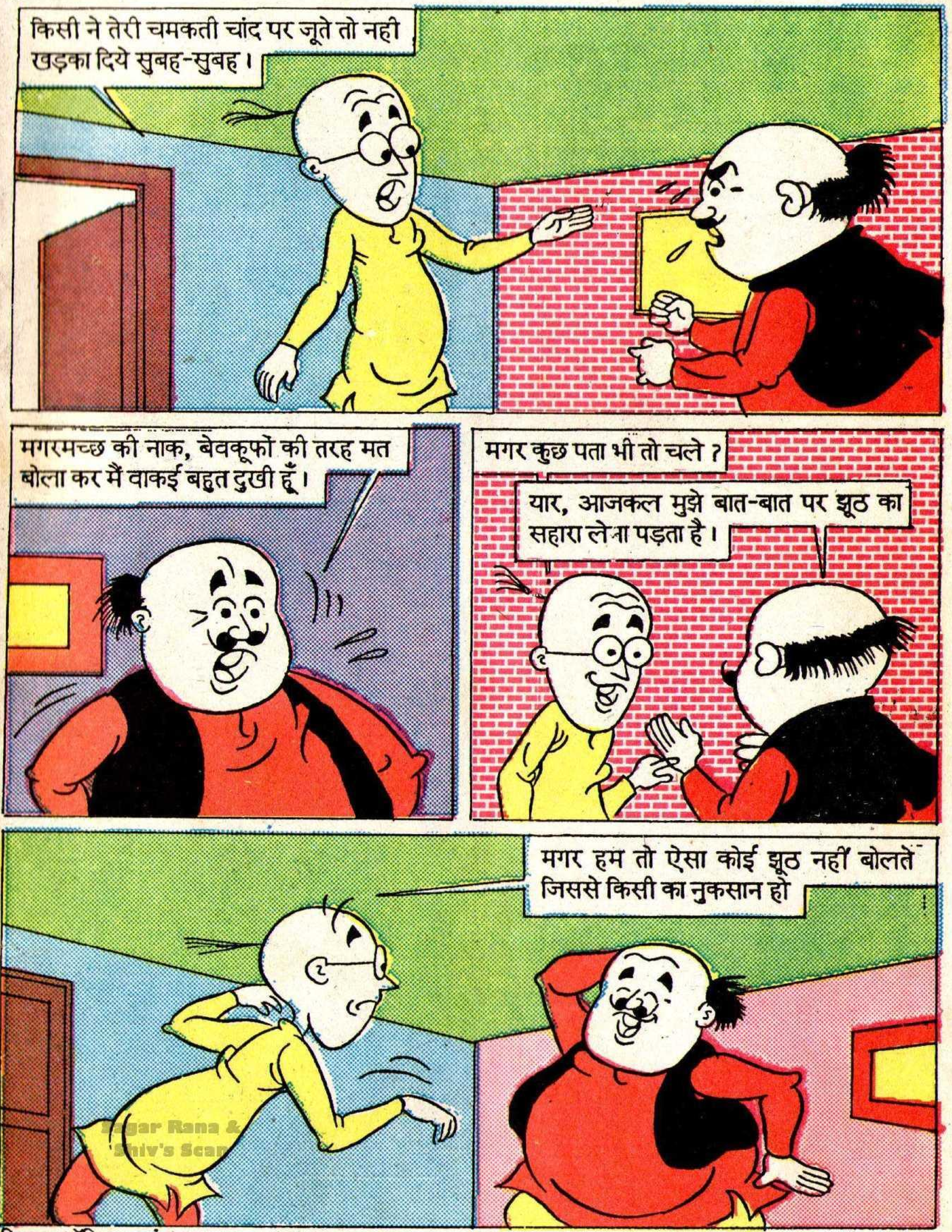
किसी ने तेरी चमकती चांद पर जूते तो नही खड़का दिये सुबह-सुबह।
मगरमच्छ की नाक, बेवकूफों की तरह मत बोला कर मैं वाकई बहुत दुखी हूँ।
मगर कुछ पता भी तो चले ?
यार, आजकल मुझे बात-बात पर झूठ का सहारा लेना पड़ता है।
मगर हम तो ऐसा कोई झूठ नहीं बोलते जिससे किसी का नुकसान हो

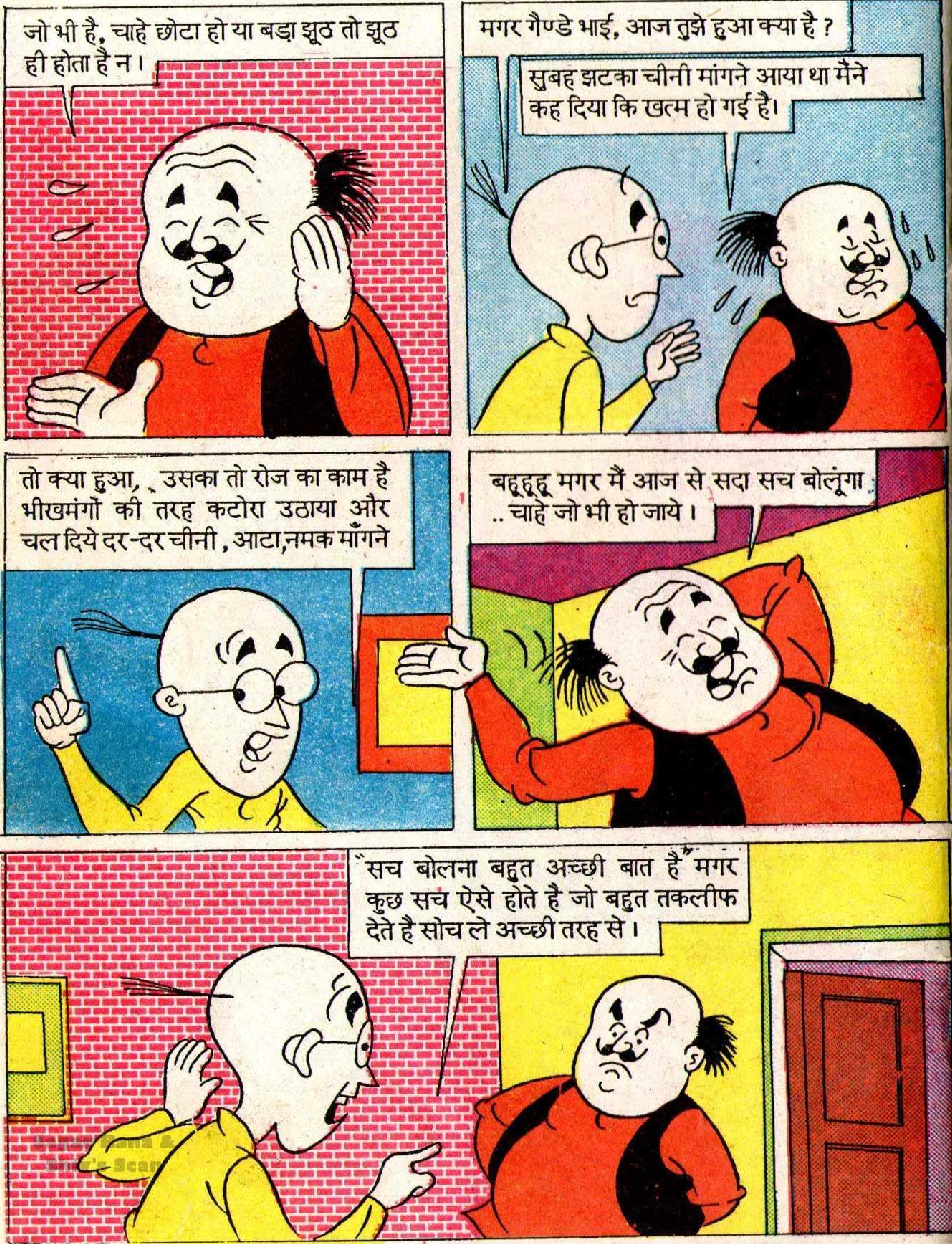
जो भी है, चाहे छोटा हो या बड़ा झूठ तो झूठ ही होता है न।
मगर गैण्डे भाई, आज तुझे हुआ क्या है ?
सुबह झटका चीनी मांगने आया था मैंने कह दिया कि खत्म हो गई है।
तो क्या हुआ, उसका तो रोज का काम है भीखमंगों की तरह कटोरा उठाया और चल दिये दर-दर चीनी, आटा,नमक माँगने
बहूहूहू मगर मैं आज से सदा सच बोलूंगा .. चाहे जो भी हो जाये।
सच बोलना बहुत अच्छी बात है मगर कुछ सच ऐसे होते है जो बहुत तकलीफ देते है सोच ले अच्छी तरह से।

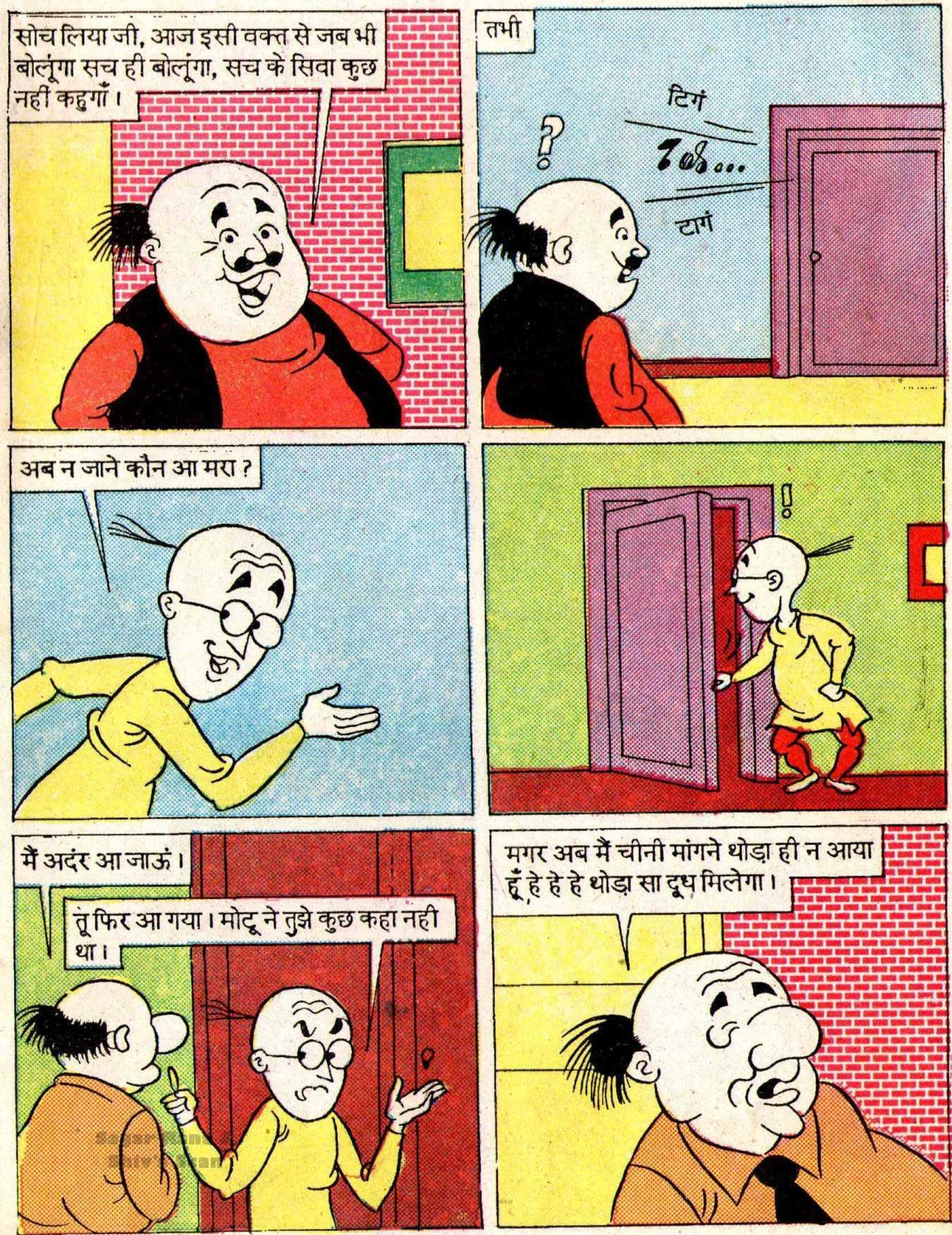
सोच लिया जी, आज इसी वक्त से जब भी बोलूंगा सच ही बोलूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहुगाँ।
तभी
टिगं
टागं
अब न जाने कौन आ मरा ?
मैं अदंर आ जाऊं।
तू फिर आ गया। मोटू ने तुझे कुछ कहा नही था।
मगर अब मैं चीनी मांगने थोड़ा ही न आया हूँ हे हे हे थोड़ा सा दूध मिलेगा।

एक सैकिण्ड से भी पहले भाग जा... वरना SS
क्यों भगा रहा है बेचारे यतीम डाक्टर को, ले भाई सारा दूध ले जा
अयं ?
सोच क्या रहा है, यह ले चीनी भी ले जा पहले मैने झूठ बोला था
तुम सारा दूध मुझे दे रहे हो .. जरुर इसमे कोई राज़ है .. इस दूध को बिल्ली जूठा कर गई होगी वरना तुम मुझे एक बूंद न देते।
नही भाई, मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ। दूध ले जाओ

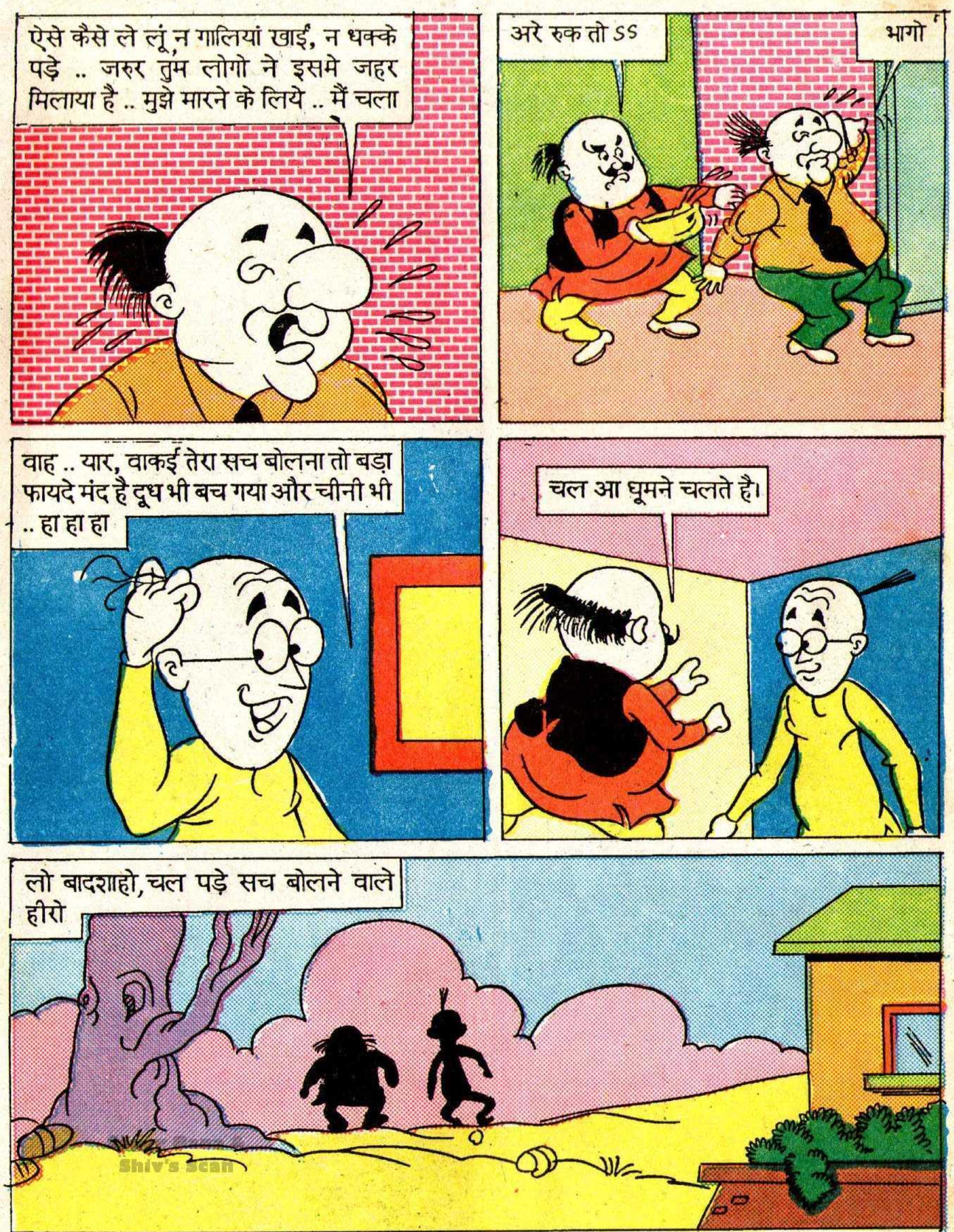
ऐसे कैसे ले लूं न गालियां खाईं, न धक्के पड़े .. जरुर तुम लोगो ने इसमे जहर मिलाया है .. मुझे मारने के लिये .. मैं चला
अरे रुक तो SS
भागो
वाह .. यार, वाकई तेरा सच बोलना तो बड़ा फायदे मंद है दूध भी बच गया और चीनी भी .. हा हा हा
चल आ घूमने चलते है।
लो बादशाहो, चल पड़े सच बोलने वाले हीरो

Shiv's Scan

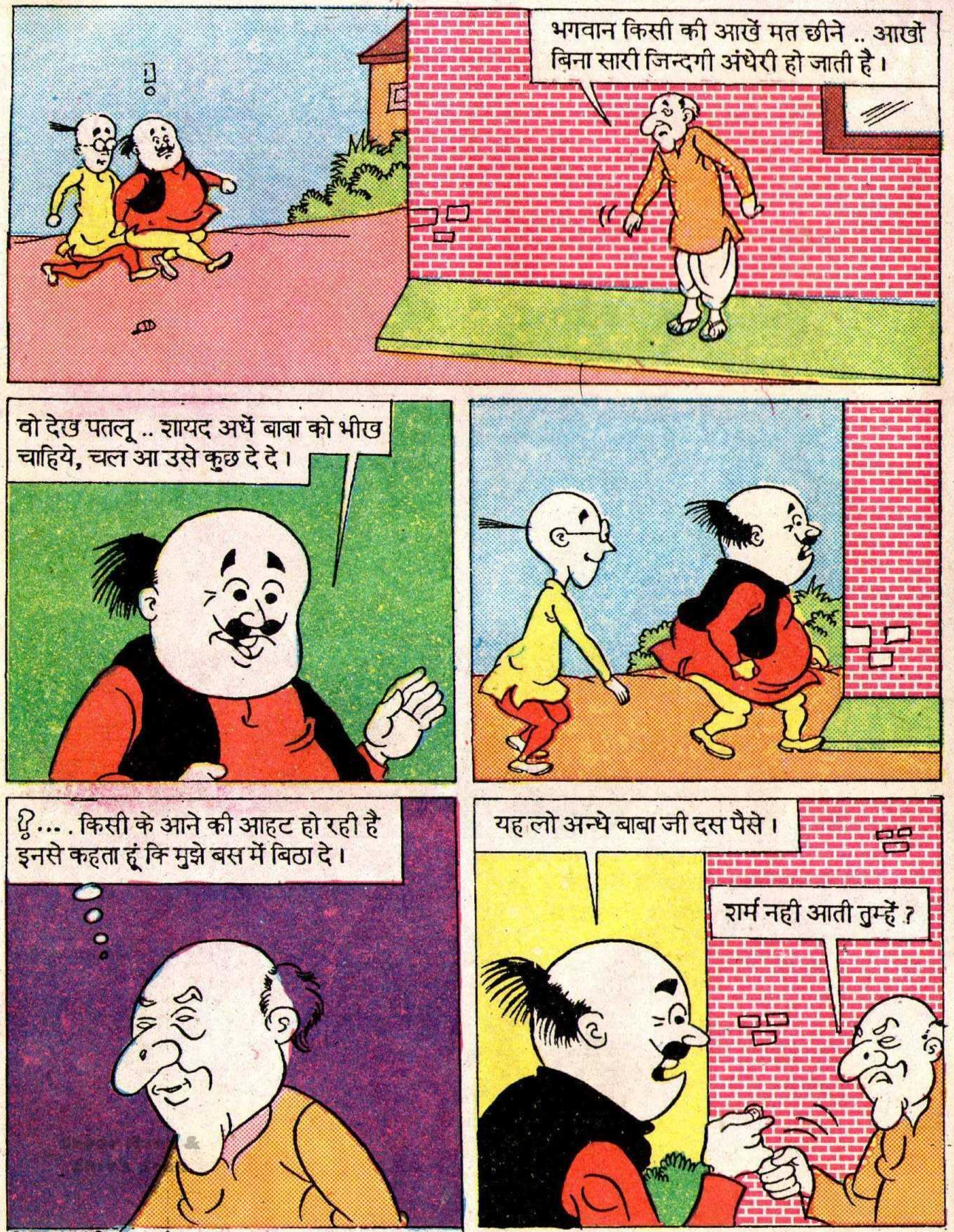
भगवान किसी की आखें मत छीने .. आखों बिना सारी जिन्दगी अंधेरी हो जाती है।
वो देख पतलू .. शायद अधें बाबा को भीख चाहिये, चल आ उसे कुछ दे दे।
?.... किसी के आने की आहट हो रही है इनसे कहता हूं कि मुझे बस में बिठा दे।
यह लो अन्धे बाबा जी दस पैसे।
शर्म नही आती तुम्हें ?

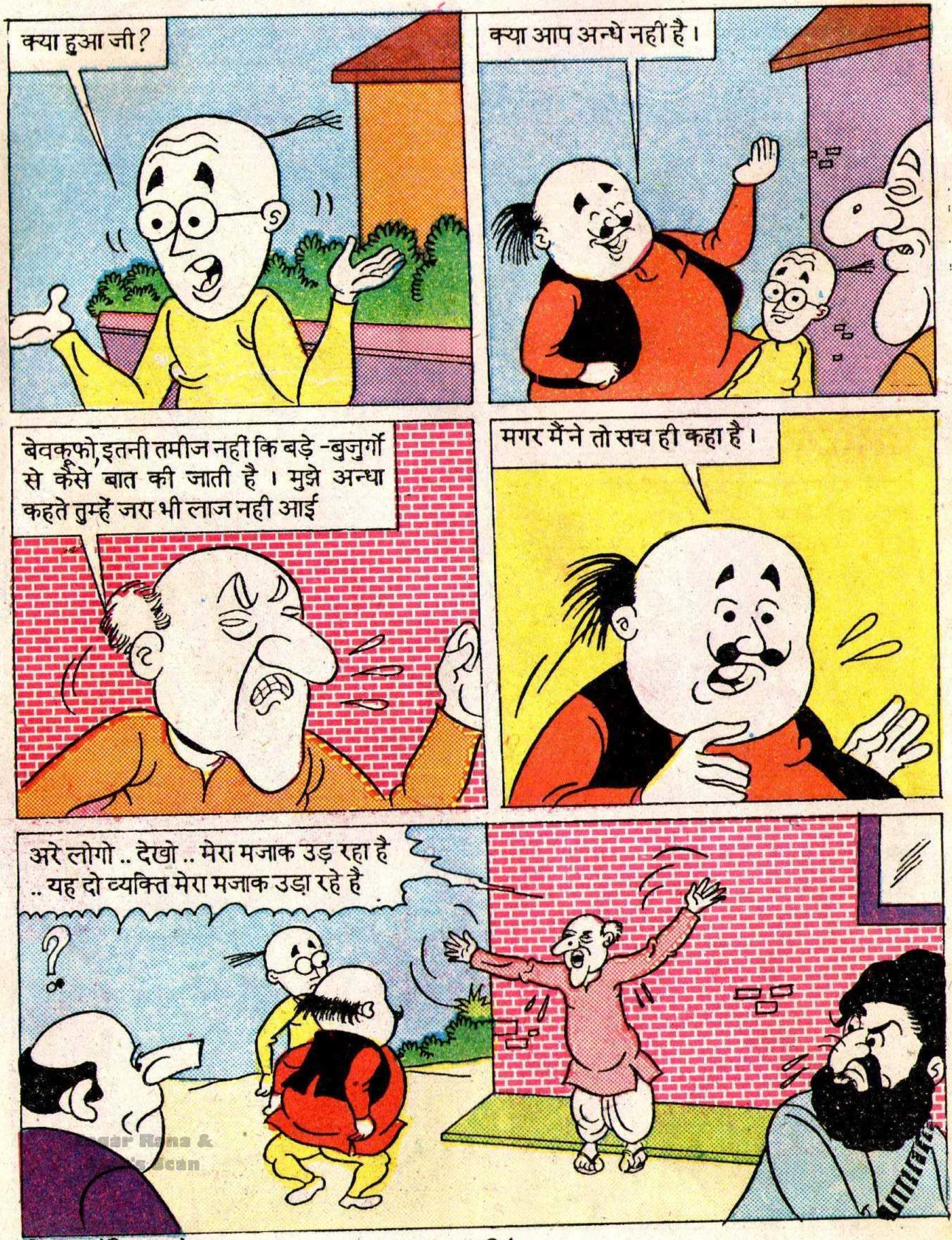
क्या हुआ जी?
क्या आप अन्धे नहीं है।
बेवकूफो,इतनी तमीज नहीं कि बड़े -बुजुर्गो से कैसे बात की जाती है । मुझे अन्धा कहते तुम्हें जरा भी लाज नही आई
मगर मैं ने तो सच ही कहा है।
अरे लोगो .. देखो .. मेरा मजाक उड़ रहा है .. यह दो व्यक्ति मेरा मजाक उड़ा रहे है
?

शहरों में भीड़ लगते कौन सा वक्त लगता है
अरे पिताजी आप .. यहां क्या कर रहे हैं
क्या हुआ ?
कौन, राम लाल बेटा .. शुक्र है तू आ गया मैं जरा दवा लेने आया था मगर यह दोनो लड़के मुझे अन्धा -अन्धा कह कर चिड़ा रहे है।
मगर भाई इसमें झूठ क्या है। सच ही तो है
बेवकूफो, ऐसे सच का फायदा क्या जो किसी को दुखी कर दे .. तुमने मेरे पिताजी को तंग किया है अब हो जाओ तैयार पिटने को .. गुर्रर्रर्र
हाय मर गया
उई उई
बचाओ

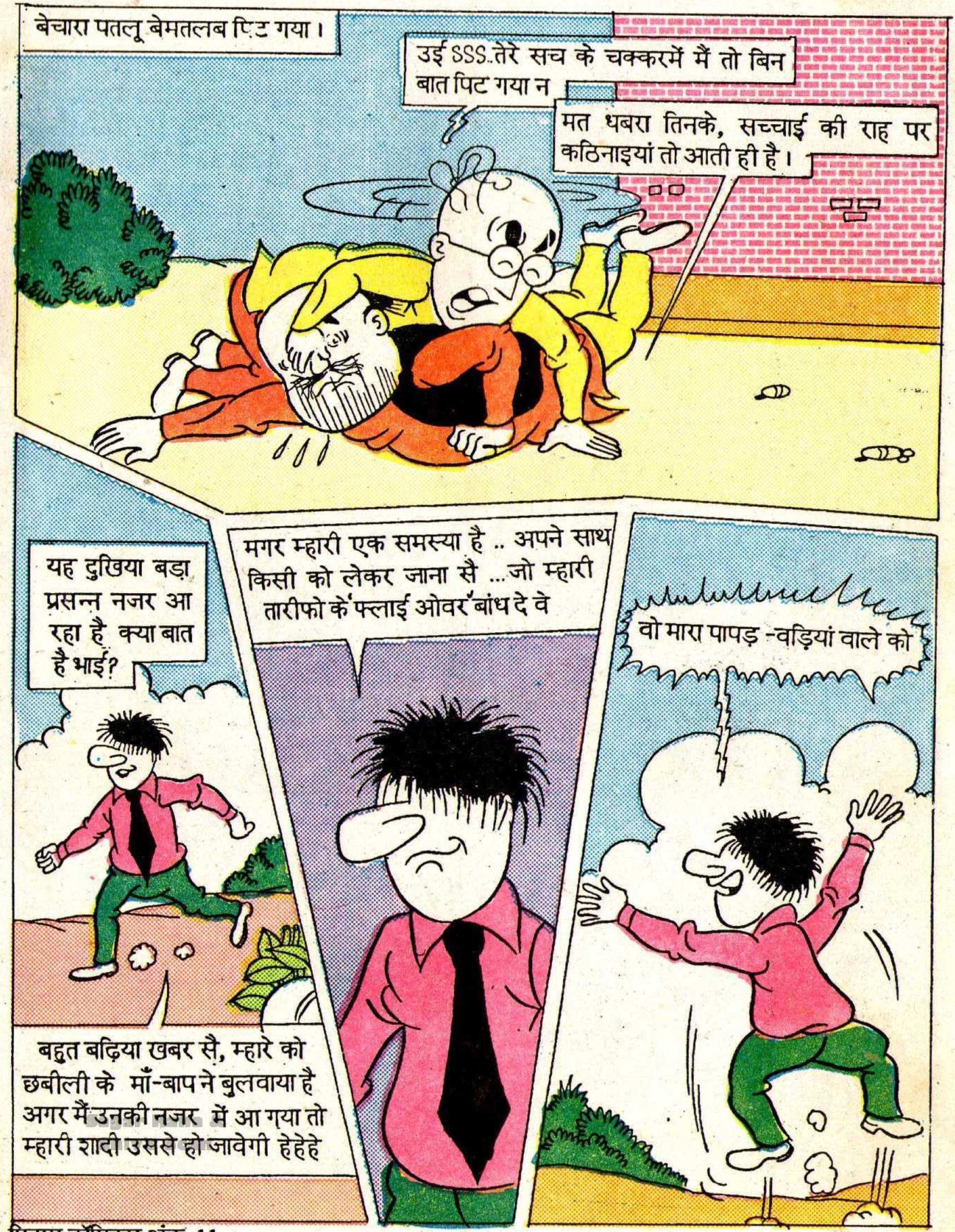

बेचारा पतलू बेमतलब पिट गया।
उई SSS..तेरे सच के चक्करमें मैं तो बिन बात पिट गया न
मत धबरा तिनके, सच्चाई की राह पर कठिनाइयां तो आती ही है।
यह दुखिया बड़ा प्रसन्न नजर आ रहा है क्या बात है भाई?
बहुत बढ़िया खबर सै, म्हारे को छबीली के माँ-बाप ने बुलवाया है अगर मैं उनकी नजर में आ गया तो म्हारी शादी उससे हो जावेगी हेहेहे
मगर म्हारी एक समस्या है .. अपने साथ किसी को लेकर जाना सै ...जो म्हारी तारीफो के 'फ्लाई ओवर' बांध दे वे
वो मारा पापड़ -वड़ियां वाले को

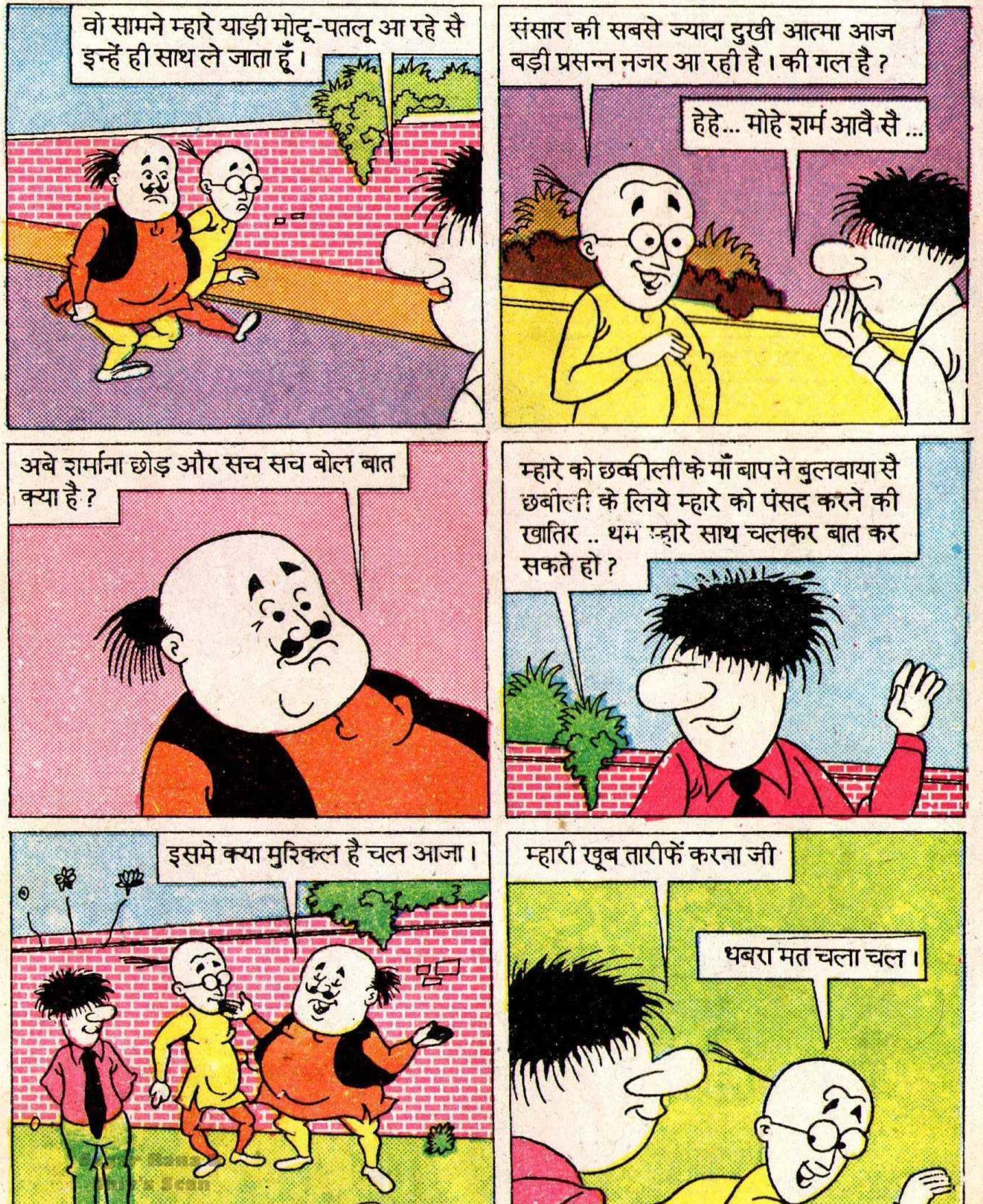
वो सामने म्हारे याड़ी मोटू-पतलू आ रहे सै इन्हें ही साथ ले जाता हूँ।
संसार की सबसे ज्यादा दुखी आत्मा आज बड़ी प्रसन्न नजर आ रही है। की गल है?
हेहे... मोहे शर्म आवै सै ...
अबे शर्माना छोड़ और सच सच बोल बात क्या है?
म्हारे को छबीली के माँ बाप ने बुलवाया सै छबीली के लिये म्हारे को पंसद करने की खातिर .. थम म्हारे साथ चलकर बात कर सकते हो?
इसमे क्या मुश्किल है चल आजा।
म्हारी खूब तारीफें करना जी
घबरा मत चला चल।

बेचारा दुखिया नही जानता कि वो किन को साथ ले जा रहा हैं। मगर हम तो कुछ कर नही सकते सौ हम तो चुप ही रहेंगे
छबीली के माता -पिता उनका इंतजार ही कर रहे थे
मैंने कहा जी, लड़का देखने में शुंदर तो है न।
एक बार कहा तो है कि लाखों में एक है अपनी छबीली को ऐशा शुंदर हशबैण्ड ओर कहीं नही मिल सकता।
टिंग टांग !!!
लगता है वो आ गये, मैं दरवाजा खोलता हूं
जल्दी ही
लो बेटा ये रश-मलाई खाओ न
हेहेहे जी थैंक्यूं

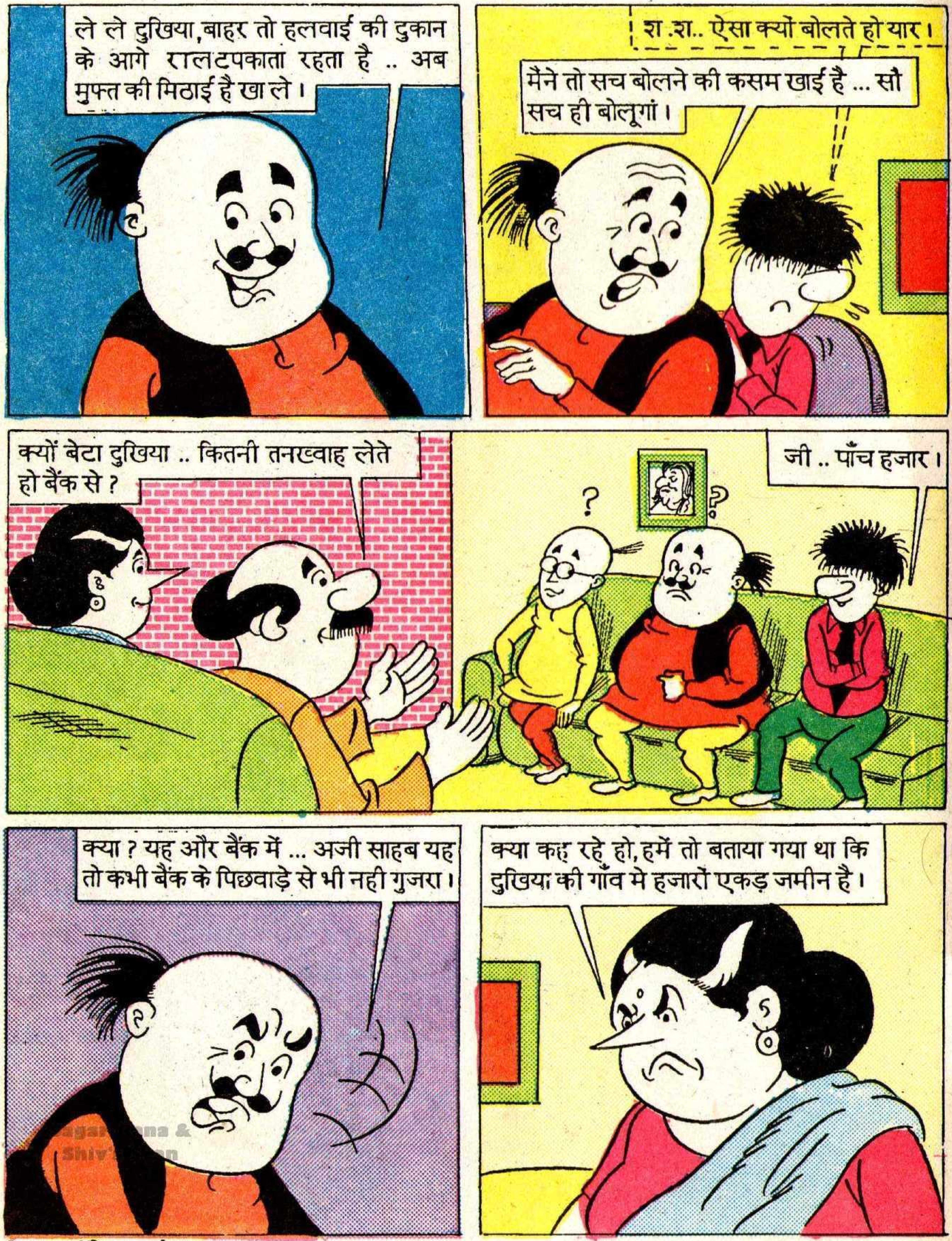

ले ले दुखिया,बाहर तो हलवाई की दुकान के आगे रालटपकाता रहता है .. अब मुफ्त की मिठाई है खा ले।
श .श.. ऐसा क्यों बोलते हो यार।
मैंने तो सच बोलने की कसम खाई है ... सौ सच ही बोलूगां।
क्यों बेटा दुखिया .. कितनी तनख्वाह लेते हो बैंक से ?
?
?
जी .. पाँच हजार।
क्या ? यह और बैंक में ... अजी साहब यह तो कभी बैंक के पिछवाड़े से भी नही गुजरा।
क्या कह रहे हो,हमें तो बताया गया था कि दुखिया की गाँव मे हजारों एकड़ जमीन है।

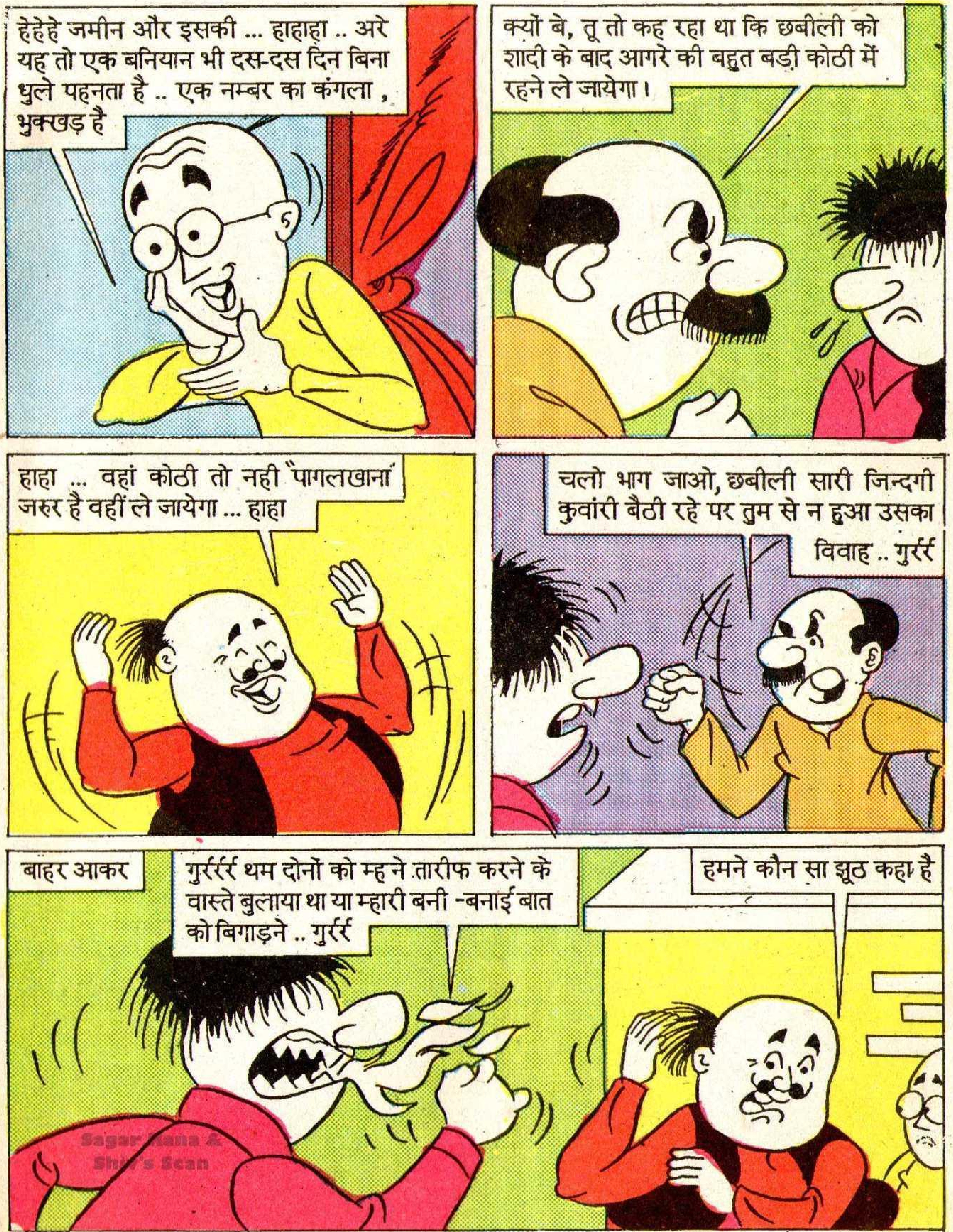

Sagar Rana & Shiv's Scan

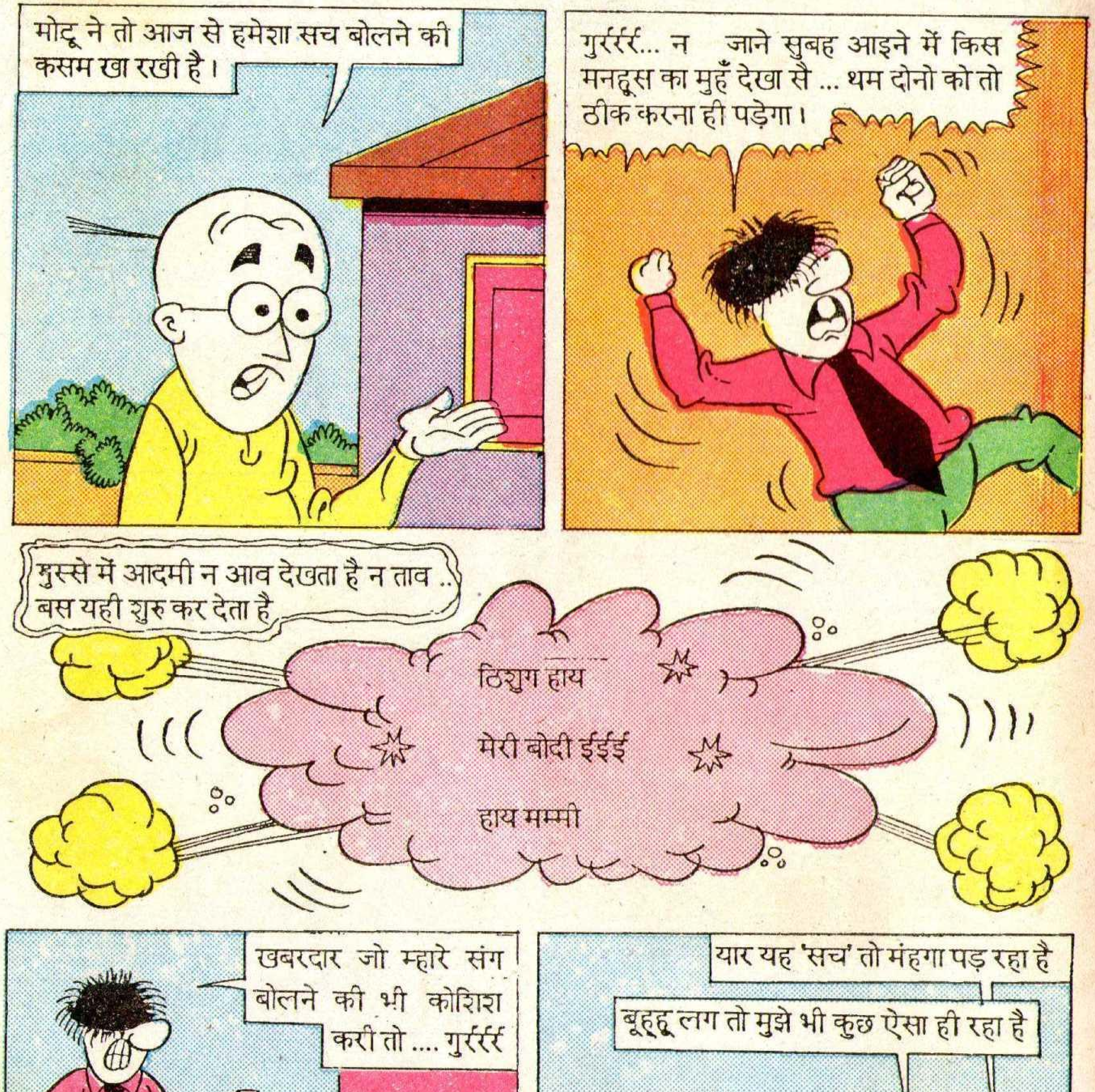
मोटू ने तो आज से हमेशा सच बोलने की कसम खा रखी है।
गुर्र्र्र... न जाने सुबह आइने में किस मनहूस का मुहँ देखा सै ... थम दोनो को तो ठीक करना ही पड़ेगा।
गुस्से में आदमी न आव देखता है न ताव .. बस यही शुरु कर देता है
ठिशुग हाय
मेरी बोदी ईईई
हाय मम्मी
खबरदार जो म्हारे संग बोलने की भी कोशिश करी तो .... गुर्र्र्र
यार यह 'सच' तो मंहगा पड़ रहा है
बूहहू लग तो मुझे भी कुछ ऐसा ही रहा है

तो क्यों न यार, जहां सच न चले वहां झूठ सही वाला फामूर्ला ही अपना लें
मैं इतनी जल्दी हिम्मत नही हारता, एक बार ओर ट्राई करके देख लेते है।
यह तीन कंगले यहां कहां धूम रहे है ?
मेरे ख्याल से यही वो जगह है।
तो फिर हो जाओ शुरु
मगर जरा सावधानी से
यह तो कोई सस्पैसं वाला क्कर है
कोई सस्पैसं -वस्पैसं नहीं है, कल रात बैंक में डाका डाल कर आ रहे कल्लू डकैत की यहाँ पुलिस से मुठभेड़ हो गई कल्लू तो पकड़ा गया मगर नोटो से भरा बैग बरामद नही हुआ
ओर हम वही बैग ढूंढ़ रहे हैं।
ढूंढ़ भी लेगे क्योंकि नोट सूंधने का मुझे बीस साल का तजुर्बा है।

मैं यह हुक वाली रस्सी उपर फैंकता हूं। फिर रस्सी के सहारे इस मकान की छत पर जाकर देखता हूँ। यदि कोई आता नजर आये तो धीरे से रस्सी हिला देना .. मैं फटाफट उतर आऊगां।
खटाक
अहा वो रहा बैग
बैग तो हाथ में आ गया मगर

श श पपीते कोई आ रहा है रस्सी खींच
पपीते ने "धीरे" से रस्सी खीची
खड़ाग
अरे बाप रे
धड़ाम !!!
बूहूहूहू इतनी जोर से क्यो रस्सी खींच दी मोटे पपीते।
जरा जोर "कुछ" ज्यादा ही लग गया।
अरे, यह तो अपने मोटू -पतलू के कदमों की आहट थी।
तुम तीनो यहां खड़े क्या कर रहे हो ?
ब्रेक डासं कर रहे है।

बोल कैसे रहा है वे फुटपाथिये ?
अरे इस बैग में क्या है ?
कुछ नहीं, लोटपोट की पुरानी प्रतियाँ हैं
अरे इनसे क्या छुपा रहे हो, यह बैंक डकैती के रुपये है इन्हें अब पुलिस स्टेशन में जमा करवायेंगे।
कोई चक्कर नहीं है ..यह सब अब मेरा है खबरदार किसी ने कुछ कहा तो, मैनें ढूंढा है सो मेरा है समझे
तभी
ऐ तुम सब यहां क्या कर रहे हो ?
कुछ नहीं जी .. यूं ही गप्पें मार रहे थे। हेहेहे

इस बैग में क्या है ?
लोटपोट की पुरानी प्रतियां है कहिये तो आपके बच्चो के लिए एक -दो दे दूं।
चोप्प । मसखरी करता है ... चलो भाग जाओ यहां से
मगर जनाब एक सत्यवादी को तो हम भूल ही गये
ठहरिये, इस बैग मे बैंक डकैती का रुपया है।
क्या .. तो तुम लोग कल्लू के साथी हो .. इधर लाओ बैग
हां .. यही हैं वो नोट .. अब तुम सब बच नही सकते
मगर हमने तो कुछ नही चुराया .. मै सच कह रहा हूँ
सच झूठ का फैसला अदालत करेगी बेटा अब चलो थाने

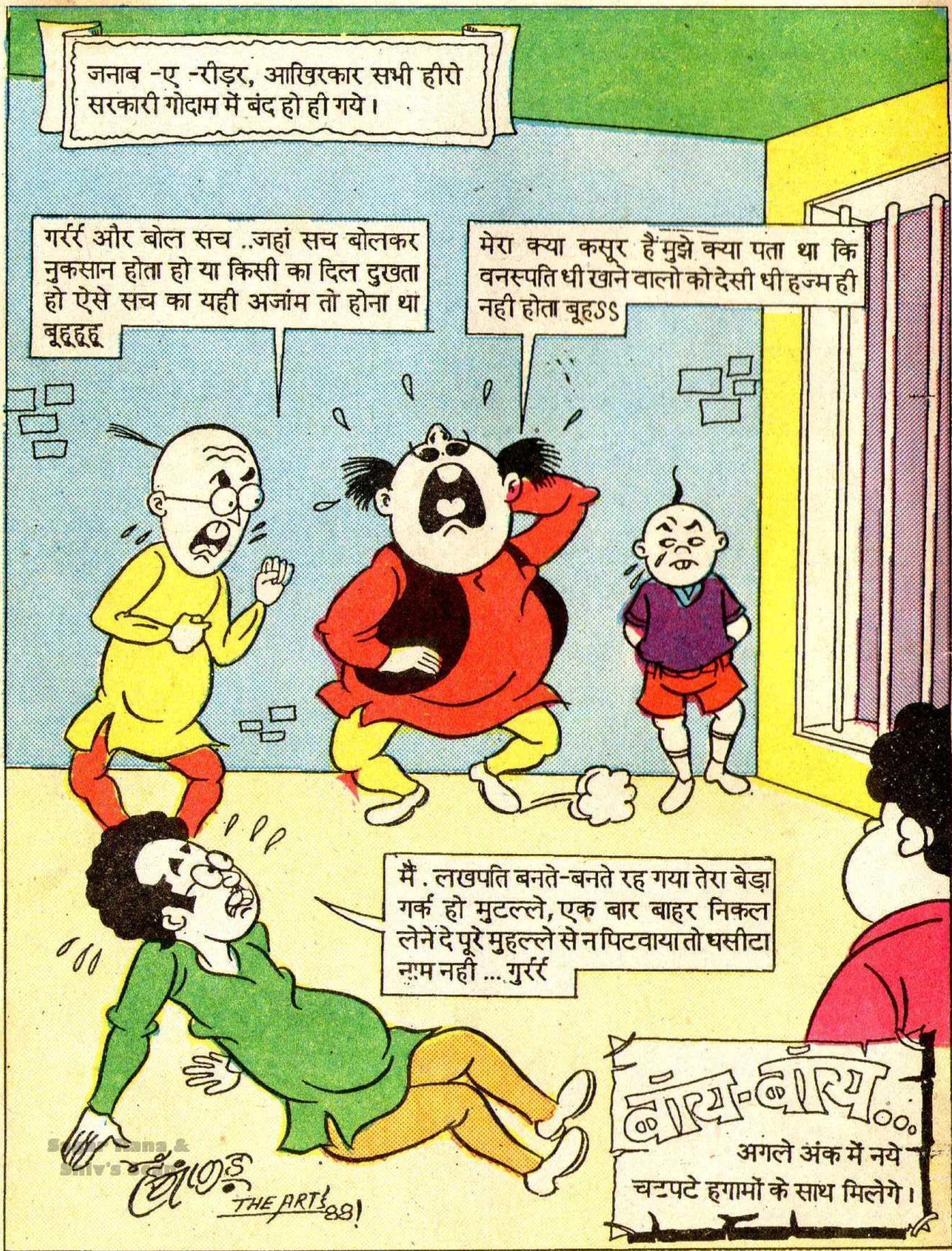
जनाब -ए -रीडर, आखिरकार सभी हीरो सरकारी गोदाम में बंद हो ही गये।
गर्रर्र और बोल सच ..जहां सच बोलकर नुकसान होता हो या किसी का दिल दुखता हो ऐसे सच का यही अजांम तो होना था बूहूहूहू
मेरा क्या कसूर हैं मुझे क्या पता था कि वनस्पति घी खाने वालो को देसी घी हज्म ही नही होता बूहSS
मैं . लखपति बनते-बनते रह गया तेरा बेड़ा गर्क हो मुटल्ले, एक बार बाहर निकल लेने दे पूरे मुहल्ले से न पिटवाया तो घसीटा नाम नही ... गुर्रर्र
बॉय-बॉय...
अगले अंक में नये चटपटे हगामों के साथ मिलेगे।
THE ARTS 88!

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी श्री ए.पी. बजाज द्वारा अरोड़बंस प्रेस, ए-5, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 से मुद्रित एंव प्रकाशित जुलाई 1988

R.No. 47324/88

इन्हें मैं पहनूगाँ।
मगर यह तो मुझे छोटे हैं, मेरे किसी काम के नहीं यह फेंके मैने दूर ssss
गुर्रर .. तेरी इतनी हिम्मत
छोडूगां नही गुर्रर
अब आयेगा मजा शैतानी करने का
हा हा हा